हिन्दी की कुछ विशेष संधियाँ

[शास्त्री द्वितीय वर्ष]

→ संस्कृत की संधियों के अतिरिक्त हिन्दी की कुछ विशेष संधियाँ हैं। इनके नियम अभी तक स्पष्ट नहीं हैं, तथापि कुछ का परिचय निम्नलिखित है—

1. 'अ' का 'अ' हो जाता है—
जैसे—

आम + चूर = अमचूर
हाथ + कड़ी = हथकड़ी
राज + वाड़ा = रजवाड़ा
लड़का + पन = लड़कपन
कान + कटा = कनकटा

2. 'इ' 'ई' के स्थान पर 'इय्' हो जाता है—
जैसे—

शक्ति + ओं = शक्तियाँ
देवी + ओं = देवियाँ

3. 'इ', 'उ' का क्रम से 'इ', 'उ' हो जाता है
जैसे—

नदी + ओं = नदियाँ
वधू + एँ = वधुएँ

4. 'ह' का 'भ' हो जाता है— जब, तब,

Scanned with CamScanner

कब, सब, अब आदि शब्दों के पीछे 'ही' आने पर 'ही' के 'ह' का 'भ' हो जाता है। जैसे –

जब + ही = जभी
कब + ही = कभी
तब + ही = तभी
सब + ही = सभी

5- 'ह' का लोप हो जाता है –

(i) कभी-कभी कुछ शब्दों की संधि होने पर किसी एक ध्वनि का लोप हो जाता है, जैसे 'ही' में 'ह्' का लोप हो जाता है।

जैसे –

यह + ही = यही
किस + ही = किसी
वह + ही = वही

भूपेन्द्र सिंह
सहायक प्राचार्य, हिन्दी
अवध बिहारी संस्कृत महाविद्यालय,
रहीमपुर, खगड़िया।

Scanned with CamScanner